JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"महेंद्र भीष्म की कहानियों में सामाजिक चेतना"

विजय कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शासकीय महाविद्यालय, जतारा जिला टीकमगढ़ मध्य प्रदेश

सारांश-

महेंद्र भीष्म हिंदी साहित्य के क्षेत्र में एक समकालीन कथाकार के रूप में हमारे सामने आते हैं । इन्होंने समाज की विसंगतियों समस्याओं और अन्य विषयों पर अपनी लेखनी चलाई जो इनकी सजगता, सक्रियता को परिलक्षित करता है अभी तक जिस विषय को शर्म का विषय समझा जाता था उस पर लेखनी चलाना सचमुच अपने आप में साहस की बात है।

बीजबिन्दु:- व्याभिचारी व्यक्तित्व, संकुचित मानसिकता, प्रेम व स्नेह, स्वाभिमानी ।

प्रस्तावना -

महेंद्र भीष्म के प्रमुख कहानी संग्रह तीसरा कम्बल, लाल डोरा, एक अप्रेसित पत्र, तेरह करवटें और बड़े सा'ब प्रमुख हैं इनकी कई कहानियों पर नाट्य मंचन हो चुके हैं आप की कहानी लालच व तीसरा कंबल में लघु फिल्म का निर्माण हो चुका है। लाल डोरा कहानी संग्रह बहुत प्रसिद् रहा है।

साबरमती एक्सप्रेस से बड़े साहब यानी अधिशासी अभियंता आ रहे थे। बड़े साहब के आने की सूचना मुकेश को मिली मुकेश ने उनकी रहने खाने पीने की व्यवस्था अपने ही पास सरकारी आवास में कर दी । "हाथ में सूटकेस पकड़े ट्रेन से उतरते बड़े साहब दिख गए वह लपक कर उनके पास पहुंच गया" [1] सूटकेस ले लिया साहब ने इशारा किया इनको भी लेते चले यह मैडम मेरे साथ हैं मुकेश ने मैडम के हाथ से भी सूट केस ले लिया और पीछे डिग्गी में रख दिए । कार के बीच वाली सीट पर दोनों लोगों को बैठा दिया। मैडम के माथे पर लाल रंग की बिंदी और मांग में भरा सिंदूर उनकी सुंदरता पर चार चांद लगा रहा था। धीरे.धीरे कार चलने लगी।

बड़े साहब ने मैडम के ऊपर इधर.उधर हाथ रखना शुरू किया। मुकेश ने शीशे पर यह दृश्य देखा तो उसे अरूचिकर लगा। बड़े साहब ने अपना हाथ मैडम की छाती पर रख दिया। "अपनी धर्मपत्नी से अन्य की उपस्थिति में देख लिए जाने की आशंका को जानते हुए भी ऐसी छेड़खानी करना बड़े लोगों को भी शोभा नहीं देता है" [2]

मुकेश सरकारी आवास पर पहुंच गया और हॉर्न लगाया तो नंदू चपरासी अंदर से आवाज सुनकर बाहर आ गया। मुकेश ने नंदू से उन्हें बैठक में सम्मान के साथ अंदर लाने के लिए कहा और वह रसोई घर में आ गया। मुकेश नंदू की पत्नी रेखा से बोला बड़े साहब की खाने पीने की सुविधाओं का ध्यान रखना है व्यवस्था अच्छी थी मुकेश ने कहा रेखा खाना जल्दी भिजवा दो।

रेखा नाम सुनते ही बड़े साहब ने पूछा देखा कौन है ? सर नंदू की पत्नी है नंदू वा देखा जलपान की व्यवस्था कर रहे थे। बड़े साहब ने रेखा को कुदृष्टि से देखा रेखा रसोई घर की तरफ जा रही थी उसी समय "बड़े साहब रेखा को पीछे से निहारते हैं मुकेश की जाँघ पर हाथ मारते बोल पड़े क्या पटाखा माल है? इसके साथ कभी इंजॉय किया "।[3]

मुकेश शर्म के मारे जमीन में गड़ा जा रहा था उसको इन से ऐसी उम्मीद नहीं थी आगे वे कहते हैं हमने तो शादी के पहले इन्हीं बाईयो के साथ अभ्यास किए हैं। मुकेश के शरीर में काटो तो खून नहीं जैसी स्थिति हो गई बड़े साहब की आशिक मिजाजी इस हद तक बढ़ जाएगी उसे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी। बड़े साहब मुकेश से बोले मैं तुम्हें एक अच्छा मोबाइल गिफ्ट करूँगा तुम इससे फिल्म देखना और ब्लू फिल्में भी देखना। मुकेश मारे शर्म के वही गड़ सा गया। उसकी हिम्मत आंखें ऊंची करने कि नहीं हुई। वह मन में सोच रहा था कि उसे बड़े साहब के रुकने की व्यवस्था सर्किट हाउस में करना चाहिए थी मुकेश के सामने जब मैडम ने शराब पी तो उसे बहुत बुरा लगा और वह भारतीय नारियों के बारे में सोचने लगा रात को 12:00 बजे तक मुकेश जगा और दिन भर का हारा थका था गहरी नींद में था बड़े साहब ने अचानक उसको जगा दिया। वह घबरा गया।" सर! सर!" आप ठीक तो हैं बड़े साहब ने बेडरूम की ओर इशारा किया और बोले तुम अंदर सोने के लिए जाओ । मैं यहां सोऊंगा सर अंदाज मैम है वह मैम नहीं है रंडी है साली "एक रात के लिए आई है शादीशुदा है रहन-सहन में सलीका है सो बाजारु नहीं दिखती है दारू की नशे में ऊपर से बढ़ती उम्र अब पहले जैसा नहीं हो पाता पर शौक कहा कम होते हैं? श्रीवास्तव! तुम चले जाओ उसके पास गबरु है जवान हो उसकी आग को ठंडा कर दो सुलगा तो मैं आया हूं पर कब खुद ठंडा हो गया पता नहीं चला"[4]

वर्तमान समय में लोगों की किन्नरों के प्रति संकुचित मानसिकता दिखाई देती हैं। "अभी भी समाज के लोग किन्नरों को नाचने, गाने, बिन बुलाए बधाई देने आ जाने वाले जबरजस्ती की व्याधि मानते हुए अश्लीलता के चश्मे से उन्हें देखते, परखते और स्वयं से दूरी बनाकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से दूर रखने की कोशिश करते हैं"[5]

जिस घर में किन्नर बच्चा पैदा होता है उस घर में समाज के लोगों की सोच को देखकर मां- बाप के ऊपर तरह.तरह की व्यंग करते हैं और मोहल्ले के लोगों द्वारा प्रतिदिन अपमानित होते हैं ऐसी स्थिति में मां- बाप को अपनी संतान के प्रति आत्मग्लानि होती है और वह उसको अन्य संतानों से कम लाड प्यार करते हैं एक दिन ऐसा आता है कि वह खुद ही घर को छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

एक बार बड़े भैया के बुलाने पर रानी पुनः अपने घर जैतपुर कन्या विवाह के अवसर पर आई थी लोग रानी को देखने आ रहे थे और उससे मुंबई का जीवन पूछते उसके गहनों को निहारते फिर एक अजीब सा मुंह बनाकर चले जाते मन ही मन कहते आखिर हो तो किन्नर।

हद तो तब हो गई जब रानी का भतीजा राकेश रानी के कान में आकर बोल गया। "रानी बुआ! विनती है आप कमरे में रहना। बारात आ रही है वरमाला में रहोगी तो लड़के वाले हमारे खानदान के बारे में क्या सोचेंगे और हमारी फजीहत होगी नाक कट जाएगी सबके सामने कहेंगे कि कन्या की बुआ तो किन्नर है" [6]। मैं वक्त की मारी हूं मैंने जब से होश संभाला है तो इस समाज में मुझे इज्जत सम्मान कभी नहीं मिला हमेशा से अपमान और दुत्कार मिला है घर परिवार और समाज से हमेशा शोषित, प्रताड़ित, तिरष्कृत और बहिष्कृत रही हूं मुझे इस समाज में हमेशा अपमान ही मिला है

चोरी करने के बाद वह वृद्ध माई पकड़ी गई तो मैंने पूछा आखिर ऐसी कौन सी मुसीबत आ गई जो तुम इस उम्र में यह काम करने लगी हो उसने हाथ जोड़ लिए और मुंह से शब्द नहीं निकल पा रहे थे बहुत कमजोर थी ठीक से चल नहीं पा रही थी मैंने उसको पानी पिलाया और पूछा भूखी हो माई उसने उंगली से 2 दिन का इशारा किया।

"ओह ! मुझसे रहा नहीं गया मैंने वृद्धा का सिर अपने सीने से पल भर को लगाया और अपना टिफिन खोल कर उसके सामने रख दिया भूखी माई ने आलू की सूखी सब्जी और पूड़ियाँ मन से खाई इस बीच मैं दो चाय बनवा लाया"[7]। उसने मेरे सर पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया उसकी आवाज ने मुझे सोचने पर विवस कर दिया यह महिला वेश में किन्नर है क्या फिर उसने अपनी पीड़ा मुझसे बताई और जाने लगी मैंने उसकी दोनों हथेलियां पकड़ ली 'किन्नर माई की आंखों से झर झर आंसू बहने लगे । वह भाव–विह्ल हो मुझसे लिपट गई"[8]

मैं अपने जरूरी काम से बाहर जा रहा था 2 दिन बाद जब वापस आया तो माई से कहे गए स्थान पर वह मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। मैं माई को अपने घर ले आया आज हमारे परिवार के साथ माई 5 वर्ष से रह रही है घर में माई से पूछ कर हम लोग काम करते हैं माता और पिता दोनों के दर्शन हम इस माई में करते हैं और उसकी सेवा करते हैं माई आज हमारे परिवार के लोगों के साथ बहुत खुश रहती है माई जबसे हमारे घर आई है तभी से ईश्वर की कृपा हम पर बरस रही है बेटी का न्यायिक सेवा में चयन और अच्छा घर वर मिल गया यह सब किन्नर माई की कृपा से हुआ । सनातन धर्म में बताया गया है कि किन्नरों में देवी आभामंडल रहता है वे किसी को श्राप नहीं देते वह केवल और केवल आशीष देना जानते हैं दूसरों के सुख में खुश होकर नाचते, गाते, बजाते हैं अपने दुख को कभी किसी के समक्ष अनावश्यक रूप से व्यक्त नहीं करते हैं।

शालिनी माथुर एक जागरूक और परिश्रमी लड़की थी वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को देखते हुए और स्वयं की पढ़ाई के लिए खर्च उठाने के लिए वह जसवंत के ऑफिस में जॉब करने लगी जसवंत उस लड़की को परेशान करने लगा क्योंकि वह जसवंत से देह का संबंध नहीं रखना चाहती थी शालिनी ने जॉब छोड़ दी और जसवंत ने उसके 2 माह की वेतन लगभग ₹18000 खा लिए शालिनी ने जसवंत के ऑफिस में काम करने से मना कर दिया और जॉब छोड़ कर घर बैठ गई । वह कहती है "मेरे पास दो विकल्प थे पहला मैं जॉब छोड़ दूं दूसरा अपना स्वाभिमान गिरवी रखकर अपना शोषण होने दूं मैंने पहला विकल्प चुना"[9] शालिनी की मुलाकात 1 दिन राज फिल्म प्रोडक्शन की प्रोड्यूसर वा निर्देशक राजेश्वर पांडे से हुई उन्होंने कहा मेरी एक फिल्म में मॉडलिंग करोगी

मैं! हां जरूर कर लूंगी अगर पैसे मिले और कास्टिंग काउच का शिकार ना होना पड़े तो"[10]

शालिनी देखने में सुंदर थी और परिस्थितियों ने उसे निडर साहसी और स्पष्ट वादी बना दिया आत्मविश्वास के साथ साथ टैलेंट उसमें कूट.कूट कर भरा हुआ था शालिनी ने अपने परिचित मुस्लिम मित्र को अपनी परेशानी के बारे में बताया कि मेरे पिता नहीं हैं भैया बहन की पढ़ाई का खर्च स्वयं की पढ़ाई का खर्च मं इस समय अर्थ की तंगी से गुजर रही हूं। तो उसने मुझे अपने परिचित मुस्लिम अधेड़ से मिलाया जो विदेश में रहता था और भारत कभी.कभी आता था साल में 1 महीने के लिए उसने मुझे ₹50000 एडवांस दिए मुझे 3 दिन उसकी पत्नी बन कर रहना होगा और इस्लाम धर्म अपनाना पड़ेगा। "वह अपने धर्म का वास्ता देने लगा कि हमारे यहां व्यभिचारी की शक्ति से मनाही है जबकि मुताह निकाह कर कम से कम 3 दिन इस विवाह को चला कर खत्म कर सकते हैं। वह धर्म संगत होगा अतः व्यभिचार मुक्त माना जाएगा"[11]

शालिनी ने यह बात अपने परिचित एक सर से बताई तो सर ने शालिनी को ₹30000 अपने और 20000 जसवंत के यहां से शालिनी को दिला दिए जो उसकी 2 माह की वेतन मिलना थी इस तरह शालिनी को ₹50000 दिलाए तो उसने बी.एड की फीस भर दी वह इस परीक्षा में प्रथम श्रेणी से पास हुई और टीईटी की परीक्षा पास कर प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका बन गई।

तीसरा कंबल कहानी संग्रह पर फीचर फिल्म प्रस्तावित है उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के यशपाल कहानी सम्मान सहित कई सम्मानों से सम्मानित श्री महेंद्र भीष्म मा. इलाहाबाद उच्च न्यायालय लखनऊ पीठ में निबंधक सह प्रधान न्याय पीठ सचिव के पद पर रहते हुए साहित्य के क्षेत्र में अनवरत लेखन कार्य कर रहे हैं आपके लेखन से शिक्षित समाज को एक दिशा निर्देश मिल रहा है।

संदर्भ सूची–

1. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 13.
2. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 14,15.
3. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 16.
4. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 21.
5. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 22,23.
6. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 26.
7. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 30.
8. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 32.
9. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 37.
10. महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ संख्या 41.
11- महेन्द्र भीष्म–बड़े सा'ब एवं अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह काव्या प्रकाशन 2021 पृष्ठ सख्या 44.

।